

मुगल वंश (BABAR)

- तैमूर के मृत्यु के बाद मध्य एशिया में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। उन्हीं राज्यवंशों में से एक मुगल था।
- मुगल वंश का संस्थापक बाबर को माना जाता है। बाबर का वास्तविक नाम 'जहीरुद्दीन मुहम्मद' था। तुर्की भाषा में बाबर का अर्थ बाघ होता है। अतः जहीरुद्दीन मोहम्मद अपने पराक्रम एवं निर्भिकता के कारण बाबर कहलाया।
- बाबर का जन्म 14 फरवरी, 1483 को फरगना के एक छोटे से राज्य में हुआ जो अब उजबेकिस्तान में है। इसके पिता उमर शेख मिर्जा (तैमूर वंशज) तथा माता कुतुलुबनिगार खान (मंगोल वंशज) जो चंगेज खां की वंशज थी। इसलिए इसे तुर्को एवं मंगोलो दोनों के रक्त का मिश्रण था।
- बाबर अपनी दादी एहसान दौलतवेग के सहयोग से 11 वर्ष की आयु में 1494 ई. में फरगना का शासक बना और मिर्जा की उपाधि धारण किया। बाबर ने 1501 में समरकंद जीत लिया किन्तु यह जीत केवल आठ महीने ही रही। बाबर ने काबुल और गजनी पर अधिकार कर लिया।
- 1507 ई. में इसने मिर्जा की उपाधि त्याग किया और पादशाह (बादशाह) की उपाधि धारण किया।
- बाबर ने जिस नए वंश की स्थापना किया उसका नाम चगताई तुर्क था बाबर को भारत की ओर आक्रमण करने के लिए इसलिए मजबूर होना पड़ा कि उसके पड़ोस के शासक उससे हमेशा युद्ध करते रहते थे।
- बाबर पानीपत के प्रथम युद्ध से पहले भारत पर 4 बार आक्रमण किया। पानीपत का प्रथम युद्ध उसका भारत पर 5वां आक्रमण था। 1519 ई. में बाबर ने पहला बाजौर अभियान किया था। उसी आक्रमण में ही उसने भेड़ा के किला को जीत लिया। बाबर ने इस किले को जीतने के लिए सर्वप्रथम बारूद और तोप का प्रयोग किया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध के लिए बाबर को निर्मंत्रण पंजाब का सूवेदार दौलत खां लोदी, इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खां लोदी तथा राणासांगा ने दिया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई. में बाबर ने उजबेको की युद्ध नीति तुगलमा (अर्धचन्द्रकार) निति तथा तोपो को सजाने में उस्मानी विधि (रूमी विधि) का प्रयोग किया और इब्राहिम लोदी को पराजित कर दिया और युद्ध में इब्राहिम लोदी मारा गया।
- दिल्ली सल्तनत का एक मात्र शासक इब्राहिम लोदी था जो युद्ध में मारा गया था।
- भारत में तोप (कैनन) का प्रयोग पहली बार बाबर ने ही किया था।
- पानीपत के युद्ध में बाबर के तोपखाने नेतृत्व उस्ताद अली और मुस्तफा खां नामक दो तुर्की अधिकारियों ने किया।
- तुगलमा निति को अर्धचन्द्रकार निति भी कहते हैं। इस निति के सफलता का मुख्य स्रोत तोपो की उपस्थिति थी। पानीपत का युद्ध परिणाम के दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं था। फलस्वरूप इस युद्ध में भारत के भाग्य नहीं बल्कि लोदियों के भाग्य का निर्णय था।

Trick—	पान	खा	चांद	के घर
	1526	1527	1528	1529
	पानीपत	खानवा	चन्देरी	घाघड़ा
	(इब्राहिम लोदी)	(राणासांगा)	(मेदनी राय)	(अफगान सेना)

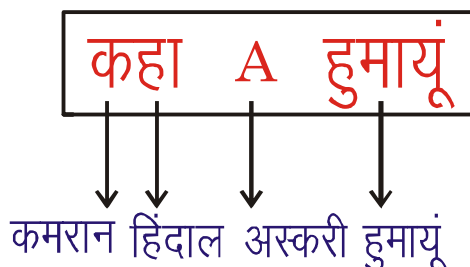
- बाबर का पसंदीदा शहर काबुल था।
- पानीपत के प्रथम युद्ध के विजय के बाद बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक-एक चांदी का सिक्का दिया और कलन्दर (दानी) की उपाधि धारण किया।

- पानीपत का प्रथम युद्ध में बाबर ने यह निर्णय नहीं किया था कि वह भारत में स्थायी रूप से रहेगा। जैसे ही बाबर ने भारत में रहने का योजना बनाया तो राणासांगा ने विरोध कर दिया। 1527 ई० में खानवा (आगरा के समीप) का युद्ध हो गया। इस युद्ध में राणासांगा के साथ इब्राहीम लोदी के भाई महमूद लोदी, आलम लोदी और चंदेरी के राजा मेदिनी राय थे। सबकी सेना आगरा आयी और उसके बाद संयुक्त सेना खानवा के मैदान में आ गयी। बाबर का मुकबला इन चारों से था। इनकी संयुक्त सेना का मुकाबला बाबर के बस की नहीं थी। बाबर ने अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाया और सैनिकों पर लगने वाले तमगा नामक टैक्स को खत्म कर दिया। बाबर को हर हाल में यह युद्ध जीतना था।
- इसी युद्ध में बाबर ने जिहाद शब्द (धर्म के लिए जनादेश) का प्रयोग किया। इस युद्ध में बाबर अपने सैनिकों को मदिरा पीने से रोक लगा दिया। बाबर की सेना पूरी बहादुरी से लड़ी और इस युद्ध में बाबर की जीत हुई। इस युद्ध के बाद बाबर ने गाजि (युद्ध का विजेता) की उपाधि धारण कर लिया।
- इसी युद्ध के बाद बाबर ने यह निर्णय लिया कि वह भारत में स्थायी रूप से रहेगा।
- 1528 के चंदेरी (MP का ग्वालियर क्षेत्र) के युद्ध में उसने मेदिनी राय को पराजित किया।
- 1529 ई. में उसने घाघरा के युद्ध में बिहार तथा अफगान के संयुक्त सेना को पराजित कर दिया। इसका नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। किन्तु बाबर ने अफगानों का पूर्णतः सफाया नहीं किया। यही बचे हुए अफगान सैनिक हुमायुं के लिए खतरा बनकर सामने आए।
- 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु हो गयी और उसे आगरा के आरामबाग में दफनाया गया।
- अकबर के समय इसके कब्र को आगरा से काबूल स्थानान्तरित कर दिया गया, क्योंकि बाबर की यह इच्छा थी उसे काबूल में दफनाया जाए।
- बाबर चार बाग शैली में आगरा में आरामबाग नामक बगीचा बनवाया था। इसमें नदी तथा नहरी द्वारा पानी देने की व्यवस्था थी। बाबर ने मुबइयान नामक एक पद्य शैली का विकास किया।
- बाबर को चार बाग शैली का जनक कहा जाता है।
- बाबर ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था। इस मस्जिद का वस्तुकार (designer) मीर वाकि था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी (तुर्की भाषा) में यह कहता है कि उसने जिस वक्त भारत पर आक्रमण किया उस वक्त भारत में 5 मुस्लिम राज्य तथा 2 हिन्दू राज्य थे मुस्लिम राज्य में-दिल्ली, मालवा, गुजरात, बहमनी तथा बंगाल था। हिन्दू राज्य में-मेवाड़ तथा विजयनगर था।
- विजयनगर शासक कृष्ण देवराय बाबर के समकालिन थे बाबर ने इन्हें उस वक्त का सबसे शक्तिशाली शासक बताया है।

Remark—

तुजुक-ए-बाबरी बाबर की आत्मकथा है, जो तुर्की भाषा में है। अब्दुल रहिम खाने खाना ने अकबर के कहने पर इसका फारसी में अनुवाद किया। इसकी फारसी अनुवाद ही बाबर-नामा कहलाता है।

- बाबर के 4 पुत्र थे। जिसमें सबसे बड़ा पुत्र हुमायुं था। बाबर अपने जीवन काल में ही हुमायुं को अपना उत्तराधिकारी बनाया था।



हुमायूँ (1530–1556)

- हुमायूँ बाबर के 4 बेटों में से सबसे बड़ा था। बाबर के कहने पर हुमायूँ ने अपने राज्य को 4 भाइयों में बांट दिया। जो हुमायूँ की सबसे बड़ी भूल शाबित हुआ।
- हुमायूँ के लिए चुनौती— 1. राज्य का बँटवारा 2. धन की कमी 3. राजपूत का विरोध 4. अफगान
- बाबर ने अफगान शासकों का पूर्णतः सफाया नहीं किया था, जिस कारण अफगान शासक हुमायूँ के लिए सबसे बड़ा खतरा बने लगे। हुमायूँ का राज्याभिषेक 1530 ई. में हुआ।
- हुमायूँ का प्रारम्भिक शासन शांतिपूर्ण था। किन्तु हुमायूँ के ही प्रमुख विरोधी थे—एक गुजरात का शासक बहादुर शाह तथा एक बिहार का शासक शेरशाह सूरी।
- हुमायूँ ने सर्वप्रथम पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर के साथ हिस्सा लिया था, यह उसके जीवन का प्रथम युद्ध था।
- चित्तौड़ की रानी, कर्णवाही ने गुजरात के शासक बहादुर शाह के अत्याचार से बचने के लिए हुमायूँ से मदद मांगी और भेंट स्वरूप उसे राखी दिया।
- हुमायूँ कर्णवाहि की रक्षा के लिए सेना लेकर चल दिया किन्तु कालिंजर के शासक प्रताप रूद्र देव से हुमायूँ का युद्ध हो गया और हुमायूँ के पहुँचने में देर हो गयी तब तक कर्णवाहि जौहर कर चुकी थी।
- हुमायूँ बहादुर शाह को पराजित करने के लिए 1531 में सर्वप्रथम कालिंजर अभियान किया।
- कालिंजर अभियान हुमायूँ का शासक बनने के बाद पहला अभियान था।
- हुमायूँ का अफगानों के विरुद्ध पहला अभियान 1532 का दोहरिया का अभियान था। जिसमें हुमायूँ विजयी रहा।
- 1538 में हुमायूँ ने गौड़ (बंगाल) अभियान किया। इसने बंगाल का नाम जन्नताबाद रखा।
- बंगाल अभियान से लौटते समय उसकी सेना पर शेरशाह सूरी ने 1539 में अचानक चूनार की किला के पास चौसा नामक स्थान पर हुमायूँ पर आक्रमण कर दिया। हुमायूँ की सेना में भगदड़ मच गयी और पराजय की स्थिति में हुमायूँ घोड़ा सहित गंगा नदी में कुद गया। हुमायूँ की जान शिहाबुद्दीन निजाम नामक भिस्ती (मल्लाह) ने बचायी इसी कारण उसने शिबुद्दीन निजाम को एक दिन के लिए दिल्ली का शासक बनाया। इसी ने अपने एक दिन के कार्यकाल में चमड़े का सिक्का चलाया।
- इसकी जानकारी हुमायुनामा नामक पुस्तक से मिलती है। जिसकी रचना हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने किया। यह पुस्तक दो भागों में है—प्रथम भाग में बाबर तथा द्वितीय भाग में हुमायूँ की चर्चा है।
- यह मुगलकाल की एक मात्र पुस्तक है जिसकी रचना किसी महिला ने की।
- 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने वेलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में हुमायूँ को हराया और उसे भारत छोड़ने पर विवश कर दिया और 1540 में शेरशाह सूरी ने खुद को दिल्ली का शासक घोषित कर दिया।
- भारत से निष्कासन के दौरान हुमायूँ ने अपनी गर्भवती पत्नी हमिदा बानों बेगम को अमरकोट (पंजाब) के राजा वीरशाल के दरबार में छोड़कर चला गया।
- इन्हीं के दरबार में 15 अक्टूबर, 1542 को अकबर का जन्म हुआ।
- 1545 ई. में शेरशाह की मृत्यु हो गयी उसके बाद अफगानी का कोई बड़ा शासक नहीं हुआ।
- निर्वासन के दौरान हुमायूँ काबुल में रहा। हुमायूँ ने पुनः 1545 ई. में ईरान के शासक की सहयता से कंधार एवं काबुल पर अधिकार कर लिया।
- 1553 ई. में शेरशाह के उत्तराधिकारी इस्लामशाह की मृत्यु के बाद अफगान साम्राज्य विघटित होने लगा अतः ऐसी स्थिति में हुमायूँ को पुनः अपने राज्य प्राप्ति का अवसर मिला।

- 1555 में लुधियाना के समीप मच्छीवाड़ा के युद्ध में हुमायूँ ने अफगान सरदार हैवत खान तथा तातार खान को पराजित करके पंजाब जीत लिया।
- 1555 ई. में ही सरहिन्द के युद्ध (चण्डीगढ़) के युद्ध में हुमायूँ के सेनापति बैरमखान ने अफगान सेनापति सिकन्दरशाह शूर को पराजित कर दिया।
- सरहिंद विजय के पश्चात 1555 ई. में एक बार पुनः दिल्ली के तख्त पर हुमायूँ को बैठने का सौभाग्य मिला।
- हुमायूँ ने दिल्ली में दिन पनाह नामक पुस्तकालय बनवाया था। इसी पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर हुमायूँ की मृत्यु हो गयी और 1556 में हुमायूँ की मृत्यु हो गयी।
- हुमायूँ अफिम का सेबन का आदि था। यह ज्योतिष में विश्वास रखता था जिस कारण हरेक दिन अलग-अलग रंग के वस्त्र पहनता था।
- हुमायूँ के दरबार में दो प्रमुख चित्रकार-मीर सैय्यद अली तथा अब्दुल समद रहते थे।
- लेनलपु ने लिखा है हुमायूँ का अर्थ होता है खुशानसिब व्यक्ति लेकिन हुमायूँ जीवन भर लरखराते रहा और लरखराते हुए ही उसकी मृत्यु हो गयी।
- हुमायूँ की कब्र ईरानी संस्कृति से प्रभावित है, जिसका वास्तुकार मिर्जा ग्यास बेग था। यह उसकी पत्नी हमीदा बानो बेगम की हुमायूँ को अमूल्य भेंट थी। यह मकबरा दिल्ली में स्थित है।

शेरशाह सूरी (1540-1545)

- शेरशाह सूरी का बचपन का नाम फरीद खान था। इसके पिता हसन अली थे, जो बिहार के जागिरदार थे और बहलोल लोदी के दरबार में कार्यरत थे।
- हसन अली के मृत्यु के बाद शेरशाह सूरी बिहार के नमानी शासकों के दरबार में काम करने लगा।
- बहार अली नुमानी ने ही फरीद को शेरशाह सूरी की उपाधि दिया।
- शेरशाह सूरी द्वितीय अफगान वंश का संस्थापक कहा जाता है।
- शेरशाह सूरी ने जिस वंश की स्थापना किया उसे सूर वंश कहते हैं। सूर वंश की जानकारी अब्बास खान शेखानी की रचना तौफा-ए-अकबरशाही से मिलती है।
- शेरशाह सूरी को मध्यकाल में एक प्रबल प्रशासक के रूप में देखा जाता है।
- 1538 के बंगाल अभियान के बाद हुमायूँ जब लौट रहा था तो 1539 में चौसा नामक स्थान पर शेरशाह ने आक्रमण कर दिया और हुमायूँ को पराजित किया। 1540 के विलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में हुमायूँ को भारत छोड़ने के लिए विवस कर दिया और 1540 में दिल्ली का शासक बन गया।
- इसने हजरत-ए-आला की उपाधि धारण किया।
- 1541 ई. में शेरशाह का गक्खर जाति के लोगों से युद्ध हुआ, जिसमें शेरशाह उनकी शक्ति को खत्म तो न कर सका पर उनकी रोकथाम के लिए उसने पश्चिमोत्तर सीमा पर रोहतासगढ़ के किले का निर्माण करवाया। गक्खर लोग अपनी वीरता एवं साहस हेतु प्रसिद्ध थे एवं लूटपाट करते थे।
- शेरशाह ने 1542 ई. में मालवा पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया।
- 1543 ई. में शेरशाह ने रायसीन पर आक्रमण किया। माना जाता है कि शेरशाह ने इस अभियान में धोखे से राजपूत शासक पूरनमल को मार डाला। पूरनमल की मृत्यु के बाद राजपूत स्त्रियों ने जौहर कर लिया। रायसीन की यह घटना शेरशाह के चरित्र पर एक कलंक माना जाता है।

- 1544 ई. में शेरशाह सूरी ने मेवाड़ अभियान किया और यहां के शासक मालदेव को पराजित किया। मेवाड़ विजय कठिन होने के कारण शेरशाह सूरी ने कहा कि मैं एक मुट्ठी बाजरे के लिए पूरे भारत को खो चुका था।
- 1545 ई. में शेरशाह सूरी ने कलिंगर अभियान किया। यह अभियान एक दासी (Dancer) के लिए था। जिसे राजा कीरत सिंह ने देने से मना कर दिया था। इस अभियान के दौरान शेरशाह सूरी के सेना द्वारा छोड़े गये तोप का गोला कलिंगर की किला से टकराकर वापस शेरशाह-सूरी के समीप आ गिरा। जिससे शेरशाह सूरी की मृत्यु हो गयी। कलिंगर का वर्तमान नाम महोबा है। यह MP में है। शेरशाह सूरी को सासाराम में दफनाया गया।
- इसके बेटा इस्लामशाह योग्य था किन्तु 1553 में आकस्मिक मृत्यु हो गयी।
- इसके बाद फिरोजशाह शासक बना जिसे उसके मामा (मुबारिज खान) ने मरवा दिया।
- शेरशाह सूरी के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना और इस वंश का अंतिम शासक सिकन्दर शाह सूरी था।

शेरशाह सूरी का प्रशासनिक व्यवस्था

- शेरशाह सूरी एक प्रबल प्रशासक था इसने बहुत से सुधार किये। इन सारे सुधार को अकबर ने भी अपनाया था। इसी कारण शेरशाह सूरी को अकबर का पथ प्रदर्शक (रास्ता दिखाने वाला) या अकबर का पूरोगामी शासक कहा जाता है।
- टोडरमल शेरशाह सूरी के दरबार में भी सेवा दे चुके थे।
- शेरशाह सूरी ने पाटलीपुत्र का नाम बदलकर पटना रखा। इसने Grand Trunk (G.T.) Road को बनवाया किया।
- इसने किसानों से सीधा सम्पर्क स्थापित करने के लिए रय्यतवाड़ी व्यवस्था शुरू किया। यह किसानों को रय्यत कहकर बुलाता था।
- कर की चोरी न हो इसलिए उसने भूमि की नाप करवायी इस व्यवस्था को जाब्ती व्यवस्था कहा गया।
- इसने पट्टा एवं कबूलियत नामक नयी व्यवस्था शुरू की। पट्टा पर कर का विवरण रहता था कितना कर लिया जाएगा और किस समय लिया जाएगा।
- कबूलियत वह दस्तावेज था जिस पर किसान इस बात की सहमति देता था कि वह पट्टा में दिये गए कर को देन में सहमत है।
- भूमि की माप कराने के लिए जरिबान नामक कर लिया जाता था, जो किसान भूमि का माप नहीं कराता था उसे मुहाबिलाना नामक कर लिया जाता था।
- शेरशाह सूरी के समय जौनपुर शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र था। इसे भारत का शिराज (सर का ताज) कहा जाता था।
- शेरशाह सूरी ने सोने का जो सिक्का चलाया उसे असरफी या मोहरा कहा जाता है। शेरशाह सूरी ने जो चांदी का सिक्का चलाया उसे रुपया कहा गया। इसके तांबे के सिक्का को दाम कहा जाता था। इसने भूमि की जांच करने के लिए एक कानूनगो नामक अधिकारी की नियुक्ति किया। इसने दिल्ली में किला-ए-कुहना नामक मस्जिद का निर्माण कराया। इसे ही पुराना किला के नाम से जाते हैं। इतिहासकार कहते हैं कि शेरशाह सूरी के समय यदि कोई औरत आधी रात को सोना लेकर जाती है, तो कोई भी व्यक्ति उसके सोना को छुने की हिम्मत नहीं कर सकता है।
- यह इस बात की ओर इशारा करता है कि शेरशाह सूरी के समय पुलिस व्यवस्था बहुत अच्छी थी।
- इसके कठोर न्याय तथा दण्ड व्यवस्था के कारण अपराध बहुत कम होते थे।
- शेरशाह के समक्ष अमीर-गरीब मित्र, दुश्मन सभी एक समान होते थे।